B. A. Part-I

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा

मौन-निमंत्रण (पन्त)

प्रश्न: सुमित्रानंदन द्वारा रचित 'मौन-निमंत्रण' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: यह प्रकृति रहस्यमयी है। उसकी छवि मोहक और आह्लादित करने वाली है। वह हम में सौंदर्य के मूल को जानने की प्रेरणा देती है। प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध कवि प्रकृति में छिपे उस चिर रहस्य को जानना चाहता जो शक्ति और चेतना का उद्गम है। प्रकृति न केवल आनंददायिनी है, वरन वह संदेश देने वाली है। कवि प्रकृति की सुषमा से मुग्ध होकर उसका वह संदेश संदेश सुनता है जो प्रकृति के पीछे छिपा है। प्रकृति उसे निमंत्रण देती है, सृष्टिकर्ता का संदेश सुनाती है। आकाश के नक्षत्र, पृथ्वी के फूल, उषा और संध्या का सौंदर्य वर्षा और वसन्त की मधुरिमा सभी के द्वारा उस अज्ञात कर्ता निमंत्रण प्राप्त होता है। वह कौन है जिसका प्रकृति संदेश सुनाती है। वह अज्ञात भले हो, किन्तु संपूर्ण सृष्टि में वही प्रकाशित है।

पहले नीरव चाँदनी में निद्रित विश्व का उल्लेख है। कवि कहता है — जब नीरव चंद्रिका में अबोध शिशु के समान संसार निस्पन्द प्रकट होता है और संसार के प्राणियों की आँखों में अज्ञात स्वप्न विचरण करते होते हैं, उस समय ना जाने कौन नक्षत्रों की टिमटिमाहट मुझे चुपचाप निमंत्रण देता रहता है।

जब घने बादलों से ढंका हुआ भयंकर आकाश अंधकार रूप धारण कर गरजता है और समीर गहरी साँस लेता है अथवा जब वायु आँधी का रूप धारण कर लेती है और जब वर्षा की तेज झड़ी लग जाती है, उस समय सहसा बिजली की कौंध में तड़पकर न जाने कौन मुझे संकेत करता है।

जब धरती का यौवन उभार पर होता है और उसके यौवन को देखकर भौंरे गुंजार करने लगते हैं तो इस वासन्ती मधुरिमा में फूलों के हृदय से विरह के उद्गार सौरभ उच्छ्वास के रूप में फूट पड़ते हैं। उस समय सौरभ के बीच न जाने कौन मुझे संकेत भेज रहा होता है।

P.T.O

यौवन में अंगो का विकास होता है। वसुधा का यौवन का विकास वसंत काल में होता है जब फूल खिलते हैं। फूलों का सौरभ ही धरती के यौवन का उद्गार है।

आगे कवि सागर का उल्लेख करता है। बड़ी-बड़ी लहरों को देखकर वह कल्पना करता है कि समीर सागर को मथकर फेन उठा रहा है। फिर उन लहरों की व्याकुलता शांत हो जाती है और बुलबुले समाप्त हो जाते हैं। सागर के क्षुब्ध होने पर ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगती हैं। इन लहरों की हलचल से बुलबुले फूटते हैं और विलीन हो जाते हैं। यह लहरें उस अज्ञात सत्ता के हाथ हैं जिसके इशारे हमें बुलाते हैं।

प्रभात सारे संसार को आनंद और शोभा से भर देता है। पक्षियों के कलरव धरती से आकाश तक फैल जाते हैं, मानो दोनों के छोर कलरव द्वारा जोड़ दिए गए हों। भोर होते ही पलकें खुलने लगती हैं — यह सब कौन करता है?

जब गहरी अँधियारी में सारा संसार एक ही आकार का दिखलाई पड़ता है और घूमते अंधकार के साथ सारा संसार निद्रा में ऊँघता रहता है, उस समय केवल डरपोक झींगुरों की झीं-झीं की आवाज उस निद्रा को तोड़ने का प्रयास करती है। तब उस अँधेरे में जुगनुओं के प्रकाश से हमें कौन पथ दिखलाता है?

जब कली अपने हृदय का द्वार प्रिय के स्वागत के लिए प्रभात की सुनहरी छाया में खोलती है और उसकी सुरभि स्पर्श से अपने हृदय में प्रेम की पीड़ा अनुभूत करते हुए बाल-मधुप अपने भावों का गुंजार करते हैं और कली से मिलने से मिलने के लिए तड़प उठते हैं, उस समय ओस की बूँदों के रूप में न जाने कौन इन कलियों पर मेरी विस्मय-मुग्ध आँखों को सहसा अपनी ओर खींच लेता है। वह अज्ञात कौन है?

नाना प्रकार के कर्मजाल में फँसाकर दिवस का जब स्वर्णिम ~~[illegible]~~ अवसान संध्या के रूप में हो जाता है और मैं बहुत थककर अपनी सूनी सेज में

P.T.O

मैं पड़ा हुआ अपने विकल प्राणों को शीतल करता हूँ, उस समय न जाने कौन मुझे अपने सपने में अनेक आश्चर्यमय स्वप्न लोकों में भ्रमण कराता है। वह अज्ञात कौन है?

हे प्रकाशमान! तुम कौन हो जो मुझे अबोध और अनजान समझकर अपरिचित मार्ग दिखलाते हो, मेरा सहारा बन जाते हो और मेरी प्राण-बाँसुरी के छिद्रों में तुम सौन्दर्य के रहस्य-गान छेड़ जाते हो।

तुम मेरे सुख-दुख के मौन साथी हो। फिर भी, मैं यह नहीं कह सकता कि तुम वास्तव में कौन हो। वह मौन प्रेरणा देने वाला अज्ञात कौन है, मैं नहीं जानता।

U.G. B.A. Part I
Hindi (Hons)
'Maun Nimantran'